Anusandhanvallari
Vol 2024, No.1
December 2024
ISSN 2229-3388

हिन्दू अस्पृश्य जातियाँ: ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में समग्र अध्ययन

डॉ. सुमित उज्जैनवाल
शोधार्थी
राजनीतिक विज्ञान विभाग
दिल्ली विश्वविद्यालय

Publication Date: 10 December 2024

"न नास्तिक बन, वास्तविक बन, वाणी दी अनमोल। पाखंडों की जंजीरों को, तोड़ा खोल खोल ।।
ऊँच-नीच का भेद मिटाकर, मानवता का मान। सबको एक समान कहा, यही रहा अभियान ।।
श्री वाल्मीकि प्रकाश से, जग में फैला ज्ञान। ॥ -

बाबा खाकशाह

अमूर्त (Abstract)

मूलतः 'पहचान' (आईडेंटिटि) के मुद्दे पर आरम्भ होने वाले विवाद का जुड़ाव सीधे सीधे हमारे भारतीय समाज की पदसोपानीय व्यवस्था की ओर इशारा करता है। जाति-व्यवस्था देश, जागृति, संगठन और स्वतंत्रता की सबसे बड़ी दुश्मन है।[1] इसके रहते हुए कोई देश लम्बे समय तक स्वतंत्र नहीं रह सकता न ही ऐसे देश में स्थायी शांति रह सकती है। इस आलेख में भंगी, वाल्मीकि, मेहतर डोम आदि नामों की उत्पत्ति पर गंभीरता से विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है। इन तमाम पहचान से जुड़े नामों को मूल रूप से अम्बेड़करवादी विचारधारा के जानकारों के तर्कों, संघप्रचारक (अमीचन्द शर्मा, डॉ. विजय सोनकर शास्त्री), तथा आज के युग में सफाई कामगार समुदाय के लिए कार्य कर रहे मुक्ति दूतों के विश्लेषण के साथ प्रस्तुत किया गया

[1] जब से प्राचीन संस्कृत पाठों के अध्ययन के लिए आलोचना की आधुनिक ऐतिहासिक तथा भाषा वैज्ञानिक पद्धतियों का प्रयोग किया जाने लगा है। तब से ऋग्वेद के आधार पर पूर्व वैदिक समाज की बहुत सारी व्याख्याएँ प्रस्तुत की गई है। लेकिन ऋग्वेदिक समाज की तस्वीर आज भी धुंधली और विवादस्पद ही है। हाल में 10 वर्षों की अल्पावधि में जी.एस. धुर्ये आर.एस. शर्मा तथा रोमिला थापर इन तीन विख्यात द्विवानों ने इस विषय से संबंधित अपने प्रबंध प्रकाशित

Anusandhanvallari
Vol 2024, No.1
December 2024
ISSN 2229-3388

है। इन दोनों ही वैचारिक गुरपों ने इतिहास तथा सामाजिक मानोविज्ञान द्वारा जो भी तर्क दिये उनका उपयोग किया है।

कुंजी शब्द - आइडेंटटि, मुक्ति दूत, मेहतर, लाल बेगी, मुसल्ली, खाकरोक, याज्ञावाल्य, अशवालायन

परिचय (Introduction)

पहचान (आईडेंटटि) का जहाँ तक सवाल है। सफाई कामगार समाज का अधिकांश हिस्सा 'वाल्मीकि' कहलाता है। बावजूद इसके देश भर में कोई एक पहचान नहीं है। कहीं भंगी कहा जाता है, कहीं चुहड़ा। कहीं खाकरोन तो कहीं मेहतर। हर युग के साथ नाम बदले गए और सत्ता परिवर्तन के साथ नाम भी बदल दिए जाते रहे।[2] गुलामों के साथ अक्सर यह होता है। इस विचार के संबंध में भगवान दास का तर्क है कि समाज में कोई व्यक्ति अपनी इच्छा से गन्दे और निम्न माने जाने वाले कार्य करने को तैयार नहीं इसलिए उन लोगों को यह कार्य करने के लिए विवश किया गया। जो या तो वर्ण-व्यवस्था पर आधारित समाज में से दण्ड के तौर पर बहिष्कृत किये थे या कबीले से निकाल दिये गये थे। इसके अलावा या तो फिर युद्धों में पराजित हुए और बन्दी बनाये गये या अपनी इच्छा से गुलाम बने।[3]

गुलामों या दासों से भी गंदे किस्में के काम कराए जाते थे। सफाई का काम भी उन गंदे कामों में से एक था। विश्लेषण की दृष्टि नारद शास्त्र में लिखे आदेश से कुछ सबूत पेश किये जा सकते हैं।

"ऋषियों ने कानून के अनुसार पांच प्रकार के सेवकों का वर्णन किया है। इनमें चार प्रकार के मजदूर हैं दास पांचवी श्रेणी में आते हैं जिन्हें पन्द्रह श्रेणियों में बांटा गया है। यह जान लो कि दो प्रकार के पेशे होते हैं।

एक पवित्र और दूसरे अपवित्र काम वे है जो दास करते हैं। पवित्र काम मजदूर करते हैं। प्रवेश द्वारा, पाखाने, सड़के, कूड़ेदान, गुप्त अंगों को धोना, जूठन एकठ्ठा करना, मलमूत्र को उठाना, दूर फंकना उनका काम है। " इस पर राष्ट्रीय स्तर के मुक्ति दूत बिन्देश्वर पाठक अपनी प्रसिद्ध

[2] दर्शन 'रत्न' रावण (2010), अम्बेडकर से विमुख सफाई कामगार समाज, आधस संवाद आदि धर्म समाज 'आधस ' भारत, नई दिल्ली

[3] भगवान दास (2007), बाबा साहब और भंगी जातियां, गौतम बुक सेन्टर, शाहदरा, दिल्ली

कृति मुक्ति के मार्ग पर (भारत में गंदगी ढोने की प्रथा के उन्मूलन का मानशास्त्रीय अध्ययन) के हवाले से सहिबत करते हैं कि ब्राह्मणी धर्म ग्रंथों और कानून की पुस्तकों में ऊँच-नीच तथा अस्पृश्यता के प्रचार-प्रसार के लिए भगवान के नाम पर कई बातें लिखी गयी हैं। मनु, नारद, वशिष्ठ, अशवालायन, याज्ञावाल्व्य कई स्मृतिकार हुए हैं। वाजसनारेयी संहिता में चाण्डालों और पौलकस की चर्चा मैला साफ करने वाले दासों के रूप में की गयी है।

अम्बेड़करवादी विश्लेषण का एक अन्य आधार पेश करते हुए कहते हैं कि वहीं दूसरी तरफ देश का शासक रहा यह समाज, जो पहले दास से शासक था। इनकी विशेषताओं के कारण नागवंशी, द्रावड़ि और आदि-सभ्यता का सृजनाकर्त्ता कहा गया। संजीव खुदशा अपनी पुस्तक सफाई कामगार समुदाय की पृष्ठ 49 पर कहते हैं। "भंगी इन्हें इसलिए कहा गया है क्योंकि ये आक्रमण काल में आर्यों के वैदिक रस्मों रिवाज में रूकावट पैदा करते थे, इन्हें भंग करते थे। इसलिए इन्हें भंगी कहा गया। "

भंगी शब्द की उतपत्ति भंज् (भञ्ज) धातु से हुई। इसका अर्थ है। तोड़ना, छिन्न-भिन्न करना, खंड करना। ध्यान देने योग्य बात है कि सफाई करना, मल-मूत्र बिल्कुल नहीं। यह आर्यों (हिन्दू) के अन्धविश्वास तथा प्रदूषण फैलाने यज्ञ भंग कर दिया करते थे, इसलिए भंगी कहलाए।

देश के अन्य हिस्से में 'मेहतर' शब्द से भी सफाई कामगार को सम्बोधित किया जाता है। मूल रूप में फारसी शब्द है। बादशाह अकबर के समय में सफाई कामगारों ने हड़ताल कर दी। उन्हें मनाने के लिए किए गए प्रयासों में से एक यह था कि बादशाह अकबर ने उन्हें 'मेहतर ' कह कर आद दिया, जोकि मेहतर का अर्थ बड़े बुजुर्ग होता है। यह शब्द इसलिए कहा गया कि बच्चे की गंदगी माँ साफ करती है। माँ के बाद मेहतर को बड़े बुर्जुग होने का यह दर्जा प्राप्त है।

'लालबेग' नाम मुगलकाल से उभर कर आया। वास्तव में लालबेग वालमीकि शब्द का रूपांतर है। उर्दू में लिखे हुए वाल्मीकि को गलती से लालबेग पढ़ा जा सकता है। लिखने में बहुत कम अंतर होता है। उर्दू में लिखे والميكى لالميكى यह मशीन का छपा है। अगर हाथ से लिखे तो अंतर

और कम हो जाता है। इसे गलती से वाल्मीकि शब्द को लालबे पढ़ लिया गया।[4] इस गलती को ही पहचान बना दिया। मुस्लिम प्रभाव या मुस्लिम बहुत क्षेत्रों में जो आ गए, उन्हें ऐसी अलग पहचान दे दी गई। भुगल प्रभाव में हलालखोर, खाकरूब, शेख भंगी, मेहतर लाल बेगी, मुसल्ली कई नाम दिए गए।

राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ विचारक, अपनी पुस्तक "हिन्दू वाल्मीक जाति " नामक पुस्तक लेखक डा० विजय सोनकर शास्त्री ने लिखा है कि अस्वच्छ कार्यों एवं अस्पृश्यता का भारत में 12वीं सदी के पहले यानी मध्यकाल से पहले उल्लेख नहीं प्राप्त है।[5] अस्वच्छ कार्यों में प्रवीण ऐसी ही जातियों को डा0 बी0आर0 अम्बेडकर ने अस्पृश्य समाज एवं 1931 की जनगणना में अंग्रेजों ने 'डिप्रेस्ड' यानी 'दलित' के रूप में सम्बोधित किया। डा० अम्बेडकर के ही महान संघर्ष से 1935 ई0 में दबाव में आकर अंग्रेजी सरकार ने अनुसूचित जाति की सूची घोषित किया। अंग्रेजी सरकार ने भी अस्पृश्यता एवं अस्वच्छ व्यवसाय को ही अनुसूचित जाति को ही आधार बनाया। आज स्वतंत्रता प्राप्ति के संविधान में भी वे दो बिन्दु यानी अस्पृश्यता एवं अस्वच्छ व्यवसाय मात्र ही अनुसूचित जातियों की पहचान अथवा अनुसूचित जाति में सम्मिलित करने का आधार हैं। यदि सावधानी एवं विद्वतापूर्ण ढंग से अध्ययन किया जाये तो यह पूर्णरूप से स्पष्ट होता है कि अस्वच्छ कार्य ही हिन्दू समाज में अस्पृश्यता के लिए उत्तरदायी हैं यही कारण था कि 12वीं सदी के बाद विदेशी मुस्लिम आक्रांता शासकों के दमन, दलन, उत्पीड़न एवं शोषण के बाद हिन्दुओं में तीव्र गति से एक दलित समुदाय का उदय हुआ, जिसमें सबसे अधिक क्षत्रिय एवं ब्राह्मण जातियों के ही लोग थे। वैश्य एवं शूद्र जातियाँ भी प्रभावित रहीं किन्तु वह अल्प मात्रा में थी। डा0 अम्बेडकर ने अपनी पुस्तक शूद्र कौन? में यह उल्लेख किया है कि वर्तमान शूद्र (दलित) एवं पूर्वकालीन वैदिक शूद्र दोनों भिन्न थे ।

केवल हिन्दुस्तान में इन विदेशी मुस्लिम आक्रांताओं की लूट का विवरण देखें - सन् 711 ई0 में मुहम्मद-बिन-कासिम के हजारों सैनिकों ने

[4] सम्पूर्ण विश्लेषण का आधार अनुसंधान के दौरान दर्शन 'रत्न' रावण, आघस संवाद के कम्यूनिटी मोबलाईजेशन प्रोग्राम से संस्थान में आया।

[5] डॉ. विजय सोनकर शास्त्री (2014), हिन्दू वाल्मीकि जाति एक गौरवशाली इतिहास के पतन का सिंहवलोकन, प्रभात प्रकशन, दिल्ली

देवल नगर को लगातार तीन दिनों तक लूटा । दाहिर को मारने के बाद अलोर में भी काफी लूटपाट की गई। मुल्तान के मंदिरों से तो केवल सोना ही 13,200 मन लूटा था। अन्य संपदा की तो थाह ही नहीं थी ।

बेटे बाप से बढ़कर - यह कहावत हकीकत कर दिखाई महमूद गजनवी ने सैकड़ों आक्रमण, श्रम-शक्ति का अपव्यय और भयानक रक्तपात - कारण केवल धन लूटना था। पिता ने रास्ता दिखा दिया था, अतः वह भी जयपाल पर टूटा। उसके गले का हार तक उतरवा लिया, जिसकी कीमत दो लाख दीनार थी। इतना धन लूटा कि ले जाने के लिए साधन कम पड़ गए। फिर भी 25,000 दीनार, 50 हाथी बतौर हरजाना मांगा। जयपाल ने असमर्थता द्य व्यक्त की तो उसे जला दिया और इतिहासकार लिखते हैं कि जयपाल ने स्वयं ही आत्मदाह कर लिया था ।

महमूद ने मुल्तान के दाऊद का 20,000,00 दिरहम लूटा, सुखपाल का 400,000 दिरहम लूटा तथा पूरे नगर को लूटने से प्राप्त धनराशि जिसकी गणना नहीं की जा सकती थी । जयपाल के पुत्र आनन्दपाल को भी लूटा। नगरकोट से तो इतना धन लूटा कि केवल मुख्य-मुख्य वस्तुओं का नाम और उनकी मात्रा सुनकर लोग आश्चर्य में डूब जाते हैं - सोना, चांदी, हीरा, मोती, बहुमूल्य पत्थर, खजाना, शाही दिरहम 70,000,000 तथा 700,400 मन सोना, चांदी की ईंटें, 30 गज लम्बा और 15 गज चौड़ा एक चांदी का कक्ष, 40 गज लम्बी और 20 गज चौड़ी लीनेन की छतरी जो सोने एवं चांदी के खम्भों पर टिकी हुई थी, बहुमूल्य सिंहासन यानी इतना सामान कि जब उसके सभीवाहन लद गए तो उसने सैनिकों को शेष लूटका सामान आपस में बाँट लेने को कह दिया ।

इतनी लूट के बाद भी विदेशी मुस्लिम आक्रांताओं की आत्मा संतुष्ट नहीं हुई। उधर भारत के व्यापारिक केन्द्र नारायणपुर को भी लूटा, धानेश्वर के मंदिर की विपुल संपदा भी अपहृत की और नंदना को भी लूटा। सिरसा, वरन, मथुरा, कन्नौज, दोआब, कालिंजर आदि को भी लूटने के बाद उसने सोमनाथ को लूटने का मन बनाया। वहाँ लुटेरे महमूद को 14 सोने के गुंबज और दो सौ मन की एक सोने की सिकड़ी देखकर आश्चर्य हुआ था । अन्य विपुल संपदा तो वह ले जाने में सफल ही रहा। ऐसे विदेशी मुस्लिम आक्रांता डकैत को इतिहासकार लिखते हैं कि वह डकैत नहीं, बल्कि इस्लाम का प्रचारक था।

दूसरी तरफ चींटी को भी भूल से पीड़ा न पहुँचाने वाले हिन्दू धर्मवाले देश हिन्दुस्तान में इस्लाम की स्थापना अपने जीते जी कोई भी हिन्दू भला कैसे होने देता? लालची और कायरों ने ही इसे स्वीकार किया और अधिकतर बौद्धों ने ही। वाल्मीकि वंश के ब्राह्मण भी सिर कटा दिए, परन्तु इस्लाम अस्वीकार किया। इनके क्षत्रिय गोत्रों ने तो खून-पसीना एक कर दिया । चर्मकर्म सफाईकर्मी, कुछ भी बनाए गए, परन्तु इस्लाम स्वीकार नहीं किया।

ब्राह्मण जाति के बहादुर हिन्दू राजा दाहिर के पूर्व भी सिंध में राजवंशीय हिन्दू योद्धा जातियों के आगे अरबों की दाल नहीं गलती थी। 636 ई0 में जिस समय पहला अरबी आक्रमण थाना, भड़ौच और देवल पर हुआ, दाहिर के पिता चच द्वारा नियुक्त ब्राह्मण गवर्नर ने ही अरब सेनापति मुधिरादेवल को दौड़ाकर मार डाला था और उसकी सेना को समुद्रतटीय जातियों ने जाल बाँध-बाँधकर समुद्र में बहा दिया था । उसके बाद वे कभी समुद्री मार्ग से हिन्दुस्थान पर आक्रमण करने का साहस नहीं जुटा पाए थे।

अपने समय में गुर्जर एवं प्रतिहार भी एक महान योद्धा जातियों में थीं। प्रतिहार राजा नागभट्ट ने तो अरबों को अंदर तक खदेड़कर मारा था। जाबुल और काबुल के हिन्दू राजागण जो तुर्कीशाही या शाहिय कहे जाते थे, 754 ई0 में अब्बासी खलीफा मंसूर को ही पछाड़ डाला था । बख्तियार खिलजी अपने को बहुत बड़ा तीसमारखाँ समझता था और लाख समझाने पर भी नहीं माना और उसने तिब्बत- आसाम पर चढ़ाई कर दी। योद्धा असमिया जाति के लोगों ने समस्त हरियाली जला डाली। शत्रु के घोड़े घास खाए बिना मरने लगे। सैनिकों को पीने का पानी तक सुलभ नहीं हुआ। पीछे मार्ग जो जिस पुल से गए थे, वह पुल भी ध्वस्त मिला। नदी में कूद अनेक बह बए। खिलजी बच तो गया, परन्तु कुछ ही समय बाद उसे लोगों ने मार डाला। योद्धा जाति हिन्दू चंदेलों ने भी विदेशी शासकों का प्रचंड विरोध किया था । विद्याधर ने तो महमूद गजनवी से लोहा मनवा दिया था । 1019 ई0 के अनिर्णीत युद्ध को निर्णीत करने के उद्देश्य से वह 1022 ई0 में पुनः विद्याधर से जोर आजमाइश करने आया, परन्तु पार न पाया तो मैत्री का हाथ बढ़ा लिया ।

योद्धा जाति हिंदू चाहमान (चौहान) ने भी अनेक बार विदेशी मुस्लिम आक्रांताओं को धूल चटाई थी। अजमराज, औराज, विसंगराज आदि ने भी बहुत से विदेशी मुसलमानों को गाजर-मूली की तरह काट डाला था। मुहम्मद गोरी को भी तराइन के मैदान में 1191 ई० में दौड़ाकर

मारा गया था। भूल यह हुई कि उसे पीछा करके जान से नहीं मारा गया। परिणाम यह हुआ कि 1192 ई० में वह पुनः आ गया और गहड़वाल चंद्रवंशी राजा जयचंद से मिलकर पृथ्वीराज को हरा दिया। बाद में जयचंद को भी मार दिया। उसके पूर्व उसे सन् 1178 ई0 में एक महिला शासक (नाइकी देवी) ने इतनी बुरी तरह से मारा था। कि जमीन से उठने तक की शक्ति उसमें न थी। एक मुस्लिम सिपाही उसे उठाकर भागा न होता तो तराइन का दूसरा युद्ध हुआ ही नहीं होता।

बलबन को 1269 ई0 में जूदपर्वत के हिंदू वनवासियों ने बुरी तरह मारा था। दक्षिणी हिंदू स्थान की योद्धा जातियों के दो बहादुर हिंदुओं (कापय तथा बल्लाल) ने मुहम्मद बिन तुगलक को नाक में दम कर दिया था और कठ तथा पार्स्विय जातियों ने तो तैमूरलंग को छापामार युद्ध में पटखनी दी थी। इनकी मार से उसके सैनिक इतने भयभीत थे कि दिल्ली से सीधे वे अपने ही देश में जाकर रुके। दिल्ली पर अधिकार कर लेने के बाद भी तैमूर की हिम्मत नहीं हुई, जो वहाँ रुककर शासन करता । गौड़ जाति की शेरनी महारानी दुर्गावती भी महान थीं, जिसने अकबर के सामने घुटने नहीं टेके।

बूँदी के हाड़ा जाति के योद्धा औरंगजेब से तब तक लड़ते रहे, जब तक कि मेवाड़ उससे छीनकर उस पर अजीत सिंह को सिंहासन पर नहीं बैठा लिया। मथुरा के जाटों, सतनामियाँ, बुन्देले राजपूत और शिवाजी की मराठी सेना, सभी ने मुगलों की अन्तिम कील को हिला डाला। बंदा बैरागी ने तो तहलका मचाकर रख दिया था। उसके सामने उसके बेटे मारे गये। उसको घुमाते हुए गर्म चिमटों से उसके शरीर का मांस नोचा गया और जब तक मरा नहीं तब तक यह यातना दी गई। कैसे भूलेंगे इसे हिंदू योद्धा जाति के लोग ।

हिंदू योद्धा जातियों में कभी कोई भेदभाव नहीं रहा। किसी भी जाति के योद्धा प्रवृत्ति को समाज में सम्मान प्राप्त था । सिक्खों में जब गुरु परंपरा समाप्त हो गई तो 12 मिस्लें बनीं। जिनके नामों से भले ही पता चले कि समाज में उनकी प्रास्थिति बहुत उच्च नहीं थी, किन्तु कार्यों (देशरक्षा) के आधार पर वे सभी एक समान महत्वपूर्ण मानी जाती थीं। उनके नाम थे - सिंहपुरिया मिस्ल. कन्हैया मिस्ल, सुकरचकिया मिस्ल, फुलकियाँ मिस्ल, डल्लीवासिया मिस्ल करोड़सिंधिया या पंजगढ़िया मिस्ल, निशानवालिया मिस्ल, नक्कई मिस्ल, भंगी मिस्ल और शहीद मिस्ल ।

भंगी सिरल के संस्थापक श्री हरिसिंह थे। संख्या और क्षेत्र की दृष्टि से सर्वाधिक शक्तिशाली इस भंगी मिस्ल की सीमा का पाक पट्ठन तक विस्तार था। लाहौर और अमृतसर (वर्तमान पाकिस्तान के भू-क्षेत्र) तक इसमें मिला लिए गए थे । हरिसिंह के बाद इस मिस्ल का सरदार झंडा सिंह बना और इसकी शक्ति को उच्च शिखर तक पहुँचा दिया। उसने कसूर, रामगढ़ और जम्मू पर विजय पाई थी । उसने जमजमा नाम से प्रसिद्ध तोप भी छीनी थी। 1782 ई0 के बाद अन्य मिस्लों की भांति यह मिस्ल भी रणजीत सिंह के राज्य का अंग बन गई ।

यह एक ऐसा उदाहरण है, जो किसी भी वाल्मीकि एवं सुदर्शन जाति के सदस्य के लिए गर्व का विषय हो सकता है । यह जाति मुगलकाल में एक गौरवशाली राजवंश के रूप में अपने वर्तमान जाति नाम के साथ भी अपने योद्धा प्रवृत्ति का परिचय देती थी । हरिसिंह, झंडासिंह, गंडासिंह आदि नामों से क्या स्पष्ट नहीं हो जाता है कि वर्तमान वाल्मीकि, सुदर्शन, मखियार, मजहबी (सफाईकर्मी) जातियों में राजपूतों की ही नस्लें विद्यमान हैं? भंगी जाति को विभिन्न प्रान्तों में विभिन्न नामों से जाना जाता है। सभी नामों का क्षेत्रिय अर्थ सफाई कर्मियों से है इनको ही वाल्मीक भी कहा जाता है वर्तमान में इस जाति के लोगों को भंगी न कहकर वाल्मीक ही कहा जाता है। क्योंकि भंगी शब्द उसी तरह से एक गाली जैसा होता है जैसे किसी को चमार कहा जाय । भंगी, मेहतर, स्वीपर, इस्लामिक एवं ईसाई आक्रांताओं द्वारा दिये गये नाम है।

मुहम्मद गोरी ने अपने आक्रमण का आरम्भ मुल्तान और कच्छ को जीतने के साथ आरंभ किया परन्तु चालुक्य राजामाता नाइकी देवी से नाहरवाला में बुरी तरह हार गया। 1179 ई0 में उसने पेशावर, लाहौर और 1182 ई0 से 1189 ई० तक लाहौर, सिंध, पंजाब आदि को जीता था । पृथ्वीराज से उसने कई युद्ध लड़े और बार-बार पराजित हुआ। 1192 ई० में उसे सफलता मिली थी। दिल्ली, झांसी, मेरठ, बुंदेलखण्ड, अजमेर, जयचन्द के चंदवार, बयाना, ग्वालियर, गुजरात, उत्तरी दोआब, राजपूताना, बुंदेलखण्ड, बिहार, बंगाल आदि समस्त हिंदू राज्यों पर विदेशी इस्लामिक आक्रमण हुए और हिंदू पराजित हुए थे।

असल में पतन तो इस देश का हर्षवर्द्धन के बाद ही आरंभ हो गया था, क्योंकि उसके बाद चक्रवर्ती सम्राट के पद पर भारत में कोई राजा नहीं बैठ सका। केन्द्र की शक्ति टूट गयी और कोई किसी को रोकने वाला न रहा। परिणाम यह हुआ कि सारे देश में छोटे-छोटे राज्य उठ खड़े हुए और वे अपने राज्यों के विस्तार के लिए आपस में ही युद्ध करने को अपना परम

कर्तव्य मानने लगे। अपना राज्य और अपनी राजधानी राजाओं को इतनी प्यारी हो उठी कि देश का अस्तित्व ही वे भूल बैठे ।

राष्ट्रहित का अस्तित्व भूलने से ही कन्नौज के प्रतिहार, मालवा के परमार, बुंदेलखण्ड के चंदेल, उत्तरी बंगाल के पाल, बंगाल के सेन, गुजरात के चौलुक्य, कन्नौज के गहड़वाल, अजमेर के चाहमान (चौहान) दिल्ली के तोमर, त्रिपुरी अथवा दाहल के कलचुरी, मेवाड़ के गुहिल राजपूत तथा नाडौल, जालौर, असम और कामरूप के हिंदू राजवंश बारी-बारी से विदेशी इस्लामिक आक्रांताओं से जूझे परन्तु असम, कामरूप के अतिरिक्त शेष सभी के राजवंशी इतिहास का दुःखद अंत हो गया। लूटपाट के समय तक तो वे हारते और पुनः उठ खड़े होते रहे, किन्तु 1206 ई0 से जब आक्रामकों का स्थायी शासन स्थापित हो गया, उसके बाद सभी राजवंश बारी-बारी से दुःखद समापन को प्राप्त हुए। अब वे पराजित युद्धबंदी थे।

हिंदू, वाल्मीकि, सुदर्शन, मजहबी सिक्ख इत्यादि जाति ने अत्यन्त नजदीक से देखा था कि विदेशी शासक-आक्रांता ही हिंदुओं से कुछ भी, यहाँ तक कि बहू-बेटियाँ भी बलपूर्वक केवल इसलिए छीन लिया करते थे, क्योंकि वे विजेता थे। उनके सैनिक केवल लूटपाट की खुली छूट पर युद्ध में भाग लेते थे, जो पूर्णरूपेण अनैतिक था। जिन हिंदुओं के घर और खेत-खलिहान आग के हवाले कर दिए गए, जिनके हरे भरे खेतों को की मुस्लिम आक्रांताओं के घोड़ों के लिए चरागाह घोषित कर दिया गया, जिनकी भूमि छीनकर मुसलमानों में निःशुल्क बाँट दी गई, जिनके दुधारू पशुओं को काटकर खा डाला गया जिनको खौलते हुए कड़ाहों में जिंदा भून दिया गया, जिनकी गरदन काटकर मृत शरीर को कुत्तों और गीदड़ों के लिए फेंकवा दिया गया और जिनको जंगल-पर्वतों में दर-बदर जीवन व्यतीत करने पर विवश किया गया, उन लोगों द्वारा भला इस्लाम कैसे स्वीकार किया जा सकता था। हिंदू, वाल्मीकि, सुदर्शन, मजहबी सिक्ख इत्यादि जाति ने ऐसे सभी शोषणों को धैर्य से सहा था परन्तु इस्लाम अस्वीकार कर दिया था।

आज भी हिंदुत्व के नाम पर लड़ने वाली जाति के रूप में वाल्मीकि एवं सुदर्शन मजहबी सिख जाति ही अग्रणी मानी जाती है। विदेशी आक्रांताओं एवं लुटेरों को मुँहतोड़ उत्तर देने के साथ ही उनके द्वारा मंदिरों एवं मूर्तियों की बड़े पैमाने पर की गई तोड़-फोड़ का सर्वाधिक प्रत्युत्तर इसी जाति ने दिया था हिंदुत्व के नाम पर लड़ने वाली अनेक जातियों के विरोध का समापन कई रूपों में हुआ। आर्थिक उत्पीड़न के साथ शारीरिक प्रताड़ना के साथ देश - निस्कासन एवं क्रय-

विक्रय के साथ आदि । परन्तु इस योद्धा जाति ने या तो मैदान में वीरगति पाई अथवा युद्धबंदी होने पर अपने विवेक से नर-संहार को रोका और धर्म की रक्षा भी की।

प्रसंगवश एक अन्य ऐतिहासिक घटना का भी उल्लेख यहाँ संक्षेप में किया जा रहा है जिसमें 15 साल बाद हिंदू से मुसलमान बनाए गए एक सफाईकर्मी परस्पर बालक ने तो तपे - तपाए जल्लादस्वरूप अलाउद्दीन खिलजी की सत्ता को उखाड़ फेंका और दिल्ली की गद्दी पर चार माह तक हिंदू राज्य स्थापित कर दिखाया था ।

घटना सन 1305 ई0 की है। अलाउद्दीन खिलजी की सहमति से उसका सेनापति ऐनुमुल्क मुल्तानी जिन दिनों मालवा को लूट रहा था, उसक हाथ बहुत से परमार वंशीय राजपूत क्षत्रिय लोग बंदी एवं गुलाम बनाए गये थे। इस्लाम अस्वीकार करने पर उसने उन सभी को मैला ढोने के कार्यों में लगाकर सफाईकर्मी बना दिया, परन्तु उनके दो अबोध बच्चों को बलपूर्वक मुसलमान बना दिया। बच्चों को वह दृश्य भूला न था । उन्होंने इसका बदला लेने का निश्चय कर लिया।

भोग-विलास की चरम सीमा पर पहुँचकर, अलाउद्दीन खिलजी अंत में एक हिजड़ा (मलिक कफूर) के हाथों मारा गया, परंतु 35 दिनों के अंदर इन दो बालकों ने मलिक काफूर की हत्या करके खिलजी के पुत्र मुबारकशाह को गददी पर बैठाया। मुबारकशाह इससे प्रसन्न होकर सुखसख भंगी (हसन राजा) बड़े भाई को खुसरोशाह की उपाधि दी और उसके छोटे भाई हिसामुद्दीन को प्रांतपति बना दिया। इसका विरोध धूर्त अलाउद्दीन का भतीजा जियाउद्दीन बरनी ने किया जिसे ठोकर मारकर दरबार से निकाल दिया गया। वह अपनी चाटुकारिता भरी पुस्तक 'तारीखे - ए - अलाउद्दीन' लेकर दरबार से चला गया और ईरानी तुर्कों से इसकी शिकायत करके सबको मुबारकशाह और खुसरोशाह के विरुद्ध भड़काने लगा ।

मुबारकशाह अलाउद्दीन से भी अधिक विलासी निकला। इसका लाभ उठाते हुए खुसरोशाह ने अपने सगे-संबंधियों को दिल्ली स्थित शाही महल में रखने की अनुमति सुल्तान से प्राप्त कर ली और 16 अप्रैल 1320 ई० को मुबारकशाह की हत्या करके दिल्ली की गद्दी पर हिंदू राज्य स्थापित कर दिया । महलों में देवी-देवताओं की पूजा होने लगी । दरबारी एवं अन्य लोग मुस्लिम लड़कियों को बलपूर्वक अपनी पत्नी और हिंदू बनाने लगे। देखते-देखते दिल्ली में मुसलमान भाग खड़े हुए और चारों ओर हर-हर महादेव के नारे लगने लगे । परन्तु उस समय

भी उत्तरी भारत के हिंदू राजागण अपनी पराजयों का दुःखड़ा रोते रहे और खुसरोशाह के इस सफल प्रयास को एक मुस्लिम का विद्रोह मानकर चुपचाप बैठे रहे। परिणाम तय था। 6 दिसम्बर 1320 ई0 को खुसरोशाह का अंत उसके एक विश्वासपात्र मुसलमान ने कर दिया और गद्दी तुगलकवंश के हाथ में चली गयी।

हिन्दू वाल्मीकि, सुदर्शन, मखियार, रूखी, मजहबी इत्यादि जातियों का निर्माण दो ऐसी सशक्त वंशावलियों को बलपूर्वक अस्वच्छ कार्यों में लगाने से हुआ है, जिन पर पूरे हिंदुस्थान की धर्मरक्षा और देशरक्षा का दायित्व था। बार-बार के आक्रमणों को कभी-कभी कुछ विशेष परिस्थितियों में न डझेल पाने के कारण इनको युद्धबंदी बनना पड़ा और विवश अवस्था में वह सब करना पड़ा जो उनके मान-सम्मान और जाति-स्वभाव के अनुरूप नहीं था ।

विदेशी मुस्लिम आक्रांताओं एवं शासकों का कहना था कि वे हिन्दू धर्मरक्षकों को केवल इसलिए प्रताड़ित एवं उत्पीड़ित करते हैं, ताकि वे इस्लाम स्वीकार कर लें। वास्तव में यह बात भी नहीं थीं। वे शराबी और अय्यास हो चुके थे। उनका यह स्वरूप स्वयं में इस्लाम विरुद्ध हो चुका था । हिन्दू पतिव्रतधर्म पर मर मिटने वाला स्त्रियों के बलात्कारी शासकों के दरबार में नर्तकियों, वेश्याओं और हिजड़ों की भीड़ रहती थी। कुछ सुल्तान भी स्वयं को भी रुकुनुद्दीन फीरोजशाह (1236 ई0), सत्ता के लिए याकूत, नूरतुर्क एवं अल्तूनिया से प्रेमालाप एवं विवाह रचाने वाली सुल्तान रजिया (1236 - 1240 ई0) मद्यप एवं विलासप्रिय बलबन (1266दृ87 ई0), वेश्या लाल कंवर के लिए राज्य से सन्यास लेने वाला सुल्तान, कैकुबाद हिन्दू राजा हम्मीरदेव की पुत्री देवत्लस, अल्प खाँ की बहन माहरू, देवगिरि के शासक रामचंद्र की सुंदर पुत्री छिताई, गुजरात के राजा रायकरण की रूपवती पत्नी कमलादेवी, चित्तौड़ के राजा रत्नसिंह की रूपवती पत्नी पद्मावती आदि के प्रति वासनायुक्त दूषित मनोवृत्ति रखने वाला अलाउद्दीन खिलजी (1296-1316 ई0), उसका उत्तराधिकारी कुतुबुद्दीन मुबारकशाह (1316 - 1320 ई०) इत्यादि ऐसे ही भोग-विलासप्रिय शासक थे। इन्होंने भी हिन्दुओं पर इस्लाम थोपने हेतु उनकी पुत्रियों और पत्नियों तक को शस्त्र बनाया था । वंदनीय हिन्दू महिलाओं ने अपना शरीर जौहर व्रत के माध्यम से धधकती अग्नि में जला डाला, परन्तु बाप के और पतियों के सिर को कभी झुकने तक नहीं दिया था।

हिन्दुस्तान में जो योद्धा उनके उत्पीड़न एवं शोषण का शिकार हुए, सिर पर मैला ढोया एवं अपना स्वाभिमान भंग कराया, अपनी गरदनें कटाकर इस्लामिक तलवारों की धार मोटी कर दी, इस्लाम को निरन्तर ठोकरें मारी, हिन्दू - कुटुंबों की जूठन खाई परन्तु मुसलमानों का स्पर्श किया हुआ जल भी ग्रहण नहीं किया, शासन-सत्ता को सदैव ललकारते रहे और जब भी अवसर मिला, इस्लाम को तार-तार किया । हरिहर और बुक्का, बंदा बैरागी और वाल्मीकि कुंबा, कालू मदारी का नाम ऐसे ही वीरों में था जो गर्व के योग्य है ।

मध्य प्रदेश में मंडु, मांडव, मांडवगढ़, मंडप, मंडपदुर्ग जैसे कई नामों से प्रसिद्ध एक नगर है जो जनपद धार में पड़ता है। 1405 ई0 में दिलावर खाँ का पुत्र होशंगशाह धार से अपनी राजधानी यहीं मंडू लाया था। पहले वहाँ कन्नौज के प्रतिहार शासन करते थे। 12वीं - 13वीं शताब्दी में परमार वंश का शासन था। अलाउददीन की सेना ने परमारों का धर्माभिमान एवं स्वाभिमान भंग करने हेतु उनको मैला ढोने में लगाया और भंगी बनाया था। परन्तु एक भी परमार क्षत्रियों को वह इस्लाम स्वीकार नहीं करा पाया। अलाउद्दीन खिलजी के बाद वहाँ 1401 ई0 में मालवा के प्रशासक दिलावर खाँ गोरी का शासन था, जो पठान वंश-परंपरा का का था। उसके पुत्र होशंगशाह के बाद सुल्तानपुर गयासुददीन ने उस किले में 15 हजार सुंदरियों का एक विशाल संग्रह रखा था। 1531 ई० में बहादुरशाह, 1534 ई0 मैं हुमायूँ और 1554 ई0 में पुनरू हिन्दू राजा बाजबहादुर का शासन स्थापित हुआ था। 1570 ई0 में अकबर के सेनापति आदम खाँ और आसफ खाँ ने बाजबहादुर से मांडू छीना । उसकी रूपवती पत्नी ने विष खा लिया। मुगलों के बाद वहाँ पेशवाओं का अधिकार हुआ और अंत में इंदौर की मराठा रियासत में मिला लिया गया। दुर्ग में आज भी आलमगीर गेट और लालकोट के पास स्थित भंगी गेट हमारे परमार राजवंशीय राजपूतों के हिन्दू धर्मरक्षार्थ सफाईकर्मी बनाये जाने की कहानी कहता है।

कालू मदारी भी सफाईकर्मी (भंगी) समाज से थां छत्रपति शिवाजी को जब धोखे से बंदी बनाकर औरंगजेब ने जेल में डाल दिया तो उनको छुड़ाने का साहस कालू मदारी ने बड़े ही यत्न से किया था । मदारी के वेश में वह जेल के पास पहुँचा और जेलर से 'पेट की रोटी' का सवाल किया तथा उसकी चापलूसी भी की । जेलर की अनुमति पाकर वह कैदियों को खेल-तमाशा दिखाने अंदर पहुँचा और झोली में आदमी उड़ा देने का चमत्कार दिखाने की बात कहकर शिवाजी को बुलाया, झोले में भरा और यह कहते हुए चलता बना कि इसे अभी झोले से उड़ाकर

कैदी - कक्ष में पहुँचाता हूँ। लोग कैदी - कक्ष में गए तब तक वह शिवाजी को लेकर जेल से बाहर आ गया । जेलर को धन्यवाद दिया कि अंदर से काफी सामान उसे मिला है। महाराष्ट्र के लोग आज कालू मदारी की चर्चा करते सुने जा सकते हैं । परन्तु इतिहास में इस घटना की भी चर्चा नहीं है ।

इतिहास की यह घटना भी कुछ इतिहास ग्रंथों में नहीं मिलती है, परन्तु वी0डी0 महाजन ने इसका उल्लेख किया है - गुरु तेगबहादुर सिंह को इस्लाम न स्वीकारने पर औरंगजेब ने मृत्युदंड दे दिया । उनके पुत्र गुरु गोविन्द सिंह ने सिक्खों के रूप में हिन्दू शक्ति को केन्द्रित करने का प्रयास किया। उनके बाद सिक्खों की 12 मिस्लें बनीं। इनमें से एक भंगी मिसल भी थी।

स्वतंत्रता संग्राम का आरम्भ 1857 ई० से मानने वाले यह जानते हैं कि इसमें सैनिकों ने विद्रोह इसलिए किया था क्योंकि बंदूकों में कारतूस दाँतों से काटकर भरनी होती थी और वह कारतूस गाय तथा सुअर की चरबी से बनी होती थी। इसमें धार्मिक दृष्टि से हिन्दू और मुसलमान सैनिक सीधे प्रभावित थे। कारतूस बनती थी दमदम (कलकत्ता) में और बनाने वाला फैक्ट्री का कर्मचारी था मातादीन भंगी। वह उस समय अवकाश पर अपने घर मेरठ आया हुआ था। वह एक सिपाही मंगल पाण्डे से उसका लोटा मांगकर पानी पीना चाहता था। जब सिपाही ने उसे अछूत कहकर लोटा देने से इंकार किया तब उससे यह बात कही - १जल्द ही आप लोग गाय-सुअर की चरबी दाँत से काटेंगे, और मेरे कारखाने में बनी कारतूस को बंदूकों में भरोगे। सैनिक जानता था कि वह भंगी दमदम में काम करता है। इसलिए उसकी बातों पर विश्वास किया गया और सैनिक विद्रोह हो गया। आजादी मिलने के बाद उस भंगी तथा उसके परिवार को स्वतंत्रता संग्राम सेनानी का सम्मान-पत्र तथा पेंशन मिलना चाहिए थी, किन्तु उसका नाम किसी कागज पर अंकित ही नहीं किया गया।

सशस्त्र क्रांति काल की ही दूसरी घटना है। मुंडभर भाजू, तहसील कैरोना, जिला मुजफ्फरनगर की रहने वाली महावीरी देवी (सफाईकर्मी) ने महिलाओं का एक संगठन बनाया था। वह सबको मैला ढोने के कार्य से अलग होकर दूसरा कार्य करने की प्रेरणा देती थी । अंग्रेजों ने जब मुजफ्फर नगर पर अधिकार करना चाहा तो महावीरी देवी ने हाथ में बल्लम, गड़ासा आदि लेकर उन पर आक्रमण कर दिया। दर्जनों अंग्रेज मारे गये । परन्तु गोलियों के आगे बल्लमदृभाले देर तक नहीं टिके और 22 भंगी महिलाओं के साथ महावीरी देवी भी शहीद हो गयीं। स्वतंत्रता

आंदोलन के समय (1857 ई0 में) कानपुर के बीबी घर में लगभग 125 अंग्रेज स्त्री - बच्चे कैद करके रखे गये थे । उनको सश्रम कारावास जैसी सजा वहाँ दी गयी थी । छुआछूत का भेदभाव करने वाली उन कैदी स्त्रियों की देखभाल के लिए भंगी - जाति की स्त्रियों को रखा गया था। बीबी घर की अंग्रेज महिलाओं तथा बच्चों के शुभचिन्तक पुरुष की पत्नी दोनों ही भारती थे, परन्तु पत्नी अपने पति की मौत के विरुद्ध थी। पति अस्पष्ट उन कैदियों को बचाना चाहता था ताकि अंग्रेजों से उसे पुरस्कार मिल सके, जबकि पत्नी देशभक्त थी और कैदियों के प्रति कठोर थी। एक अंग्रेज महिला ने एक भंगी महिला को दो सोने की मुहर का लालच देकर एक पत्र दिया ताकि वह डाकघर में डाल दे, भंगी महिला ने वैसा न करके देशभक्ति का परिचय दिया और द्वारपाल को पत्र दे दिया । द्वारपाल ने मुख्य निरीक्षक को दिया। वह भी कैदियों का शुभचिन्तक था। अतएव पत्र की बात छिपा ली और मुहरों की चोरी का आरोप लगाते हुए भंगी महिला को पीटते-पीटते मार डाला ताकि वह पत्र का रहस्य किसी स्वतंत्रता सेनानी से न खोल सके। उसकी पत्नी को जब पूरी बात द्वारपाल और अन्य भंगी स्त्रियों ने बताई तो वह अपने पति पर आग बबूला हो उठी और बीबी घर को आग के हवाले कर दिया। सारे अंग्रेज स्त्री- बच्चे जलकर मर गये ।

1857 ई0 की क्रांति के समय की बात है, सासाराम (डुमराव) में हरेकृष्ण सिंह ने विद्रोह कर दिया था और पकड़े जाने के भय से जंगल में जा छिपे थे। वहाँ उनकी सुरक्षा में चार वाल्मीकि (सफाईकर्मी) क्रांतिकारी भी थे। उनका नाम तो कहीं नहीं लिखा मिलता है, परन्तु उन लोगों ने जिस व्यक्ति के हाथ और नाक काटे थे. उसने आने पर जो बयान दिया था उसमें हरेकृष्ण सिंह एवं चार अन्य (सफाईकर्मी जाति के लोगों) को दोषी करार किया था ।

आजादी के बाद अनेक लोगों को स्वतंत्रता सेनानी की पेंशन दी गयी, उसमें कुछ वाल्मीकि एवं सुदर्शन (सफाईकर्मी के) लोगों के भी नाम हैं। सूची में के सरायधारी मुहल्ले के कन्हैयालाल पुत्र चौता सफाईकर्मी यानी बुलंदशहर वाल्मीकि का नाम मिलता है जो 1942-43 ई0 के आंदोलन में फरार रहे और 1943-45 ई0 तक राजनैतिक बंदी रहे। इसी प्रकार उड़ीसा के कमला मोहंती भी थे जिनको 1942 ई0 में 9 माह का कारावास दिया गया था ।

हिंदू धर्म का परित्याग न करने की स्थिति में उनको अस्वच्छ, निम्न और अपवित्र कार्यों को करने से वे ब्राहमण एवं क्षत्रिय (ब्रहमक्षत्र) अपने ही समाज में अपवित्र और अस्पृश्य हो गए।

उन्हें चमार, भंगी, खटिक, दुसाध, पासी, राजभर, वियार, मुसहर, धोबी जैसे अनेक पेशागत निम्न भाव में संबोधन प्रदान किए गए। किन्तु इस्लाम स्वीकार नहीं किया और अंत तक हिन्दू धर्मपरायण की प्रतिमूर्ति बने रहे ।

धर्म रक्षा हेतु हिन्दू वाल्मीकि, सुदर्शन इत्यादि जाति के लोगों ने इस्लाम के शत्रू पशु शुअर का पालन आरम्भ किया । यही विधि हिन्दू खटिक जाति ने भी अपनाई और सफल रहें, देखादेखी अन्य दलित राजवंशिय जातियां जैसे दुसाद, मुसहर, पारधी, राजभर, पासी जातियों के लोगों ने भी सुअर पालना प्रारम्भ किया । वर्तमान समय में सुअर पालना दलित समाज का व्यवसाय एवं जीविका का साधन बन गया है।

निष्कर्ष

डॉ. अम्बेड़कर, अछूतानन्द और मगूराम के आन्दोलन दलित जातियों को गंदे पेशे छोड़ कर स्वाभिमान के साथ साफ-सुथरे पेशे अपनाने को कहते हैं। लेकिन आरक्षण का अधिक लाभ प्राप्त चर्मकार जाति या नाममात्र के अम्बेड़करवादी विचार केवल अपनी जाति के उत्थान और पहचान के लिए सामाजिक न्याय की राजनीति क्यों करते दिखाई देते हैं। यह प्रश्न वाल्मीकि दयावन के इस संदेश को समझने के लिए हमें मजबूर करता है -

अगर न होते इस धरती पर श्री वाल्मीकि भगवान ।

रामायण जैसा हितकर ग्रन्थ जानता कैसे जहान ।।

संदर्भ सूची

- रामशरण शर्मा (1992), श्ूाद्रों का प्राचीन इततहास, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली
- भगवान दास (2007), मैं भंगी हूँ, गा ैतम बुक सेन्टर, दिल्ल्ी
- बिन्देश्वर पाठण (1991) मुक्ति के मार्ग पर (भारत में गंदगी ढोने की प्रथा के उन्मूलन का समाजशास्त्रीय अध्ययन), मोतीलाल बनारसी दास पब्लिशर्स प्राइवेट लिमिटेड, बंगलो रोड़, दिल्ली
- विनोबा (4000), शुचिता से आत्म दर्शन, आखिल भारतीय-सेवा संघ प ्रकाशन
- ओमप्रकाश वाल्मीकि (1999), जूठन राधाकृष्ण प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, दिल्ली

- दर्शन 'रत्न' रावण (2010), अम्बेडकर से विमुख सफाई कामगार समाजः उपेक्षा कारण और मुक्ति, आंघस संवाद आदि धम्र समाज 'आघस' , नई दिल्ल्ी
- एस.एस. गौतम (2012), (संपादक), अनिल कुमार, वाल्मीकि जाति उद्भव विकास और वर्तमान मया, गौतम बुक्स सेन्टर, दिल्ली
- प्रो. नेमीचन्द बयोत (2011) इतिहास के पन्नों में मेहतर, वाल्मीकि एवं चाण्डाल, नवभारत प्रकाशन, जोधपुर
- शबनम बेग (2008) मुस्लिम समुदाय में छुआ-छूत, नार्दर्न बुक स्रेटर, नई दिल्ली
- संजीव खुशाह (2015), सफाई कामगार समुदाय राधाकृष्ण, पेपरबैक्स, दिल्ली
- भगवान दास (1996), बाबा साहब और भंगी जातियां गौतम बुक सेन्टर, शाहदरा
- मूलब चन्द्र बेनिवाल (2013), नरक पेश मैला प्रथा रि पर मैला ढोना यिति बनी, सम्यक प्रकाशन